# कौशाम्बी
# का
# सांस्कृतिक अध्ययन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

# कौशाम्बी
# का
# सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. तेज बहादुर यादव

नमूना • SAMPLE

**अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स**
दिल्ली ( **भारत** )

## *प्रकाशक*


# अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

**हेड ऑफिस** : ए–108, स्ट्रीट न0. 1/3,
कौशल पुरी, दिल्ली–110094 (भारत)

**Phone :** 9643620664, 9911628086
**E-mail :** adhyayapublishers@gmail.com,
adhyayapublishers@yahoo.com
**Website :** www.adhyayabooks.com


## कौशाम्बी का सांस्कृतिक अधययन


संस्करण : 2020



© लेखक



ISBN: 978-93-88688-07-9



सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।



**भारत में प्रकाशित**

वीरेन्द्र कुमार यादव 'अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के द्वारा प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।



SAMPLE

# विषय–सूची


| | | |
|---|---|---|
| | प्रस्तावना | vii |
| | आभारोक्ति | xi |
| | संकेत–सूची | xiii |
| | मानचित्र व फलक सूची | xv |
| 1. | कौशाम्बी का सामान्य परिचय | 1 |
| 2. | कौशाम्बी के प्रमुख उत्खनित भू–भाग | 29 |
| 3. | कौशाम्बी की सामाजिक स्थिति | 53 |
| 4. | कौशाम्बी की आर्थिक स्थिति | 115 |
| 5. | कौशाम्बी की धार्मिक स्थिति | 169 |
| 6. | कौशाम्बी की कला | 222 |
| 7. | उपसंहार | 303 |
| | सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची | 313 |
| | परिशिष्ट | 327 |


नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

# प्रस्तावना

प्राचीन भारत के वैभवशाली नगरों में कौशाम्बी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। जिस समय मगध राज्य के अधिपति बिम्बिसार, कोशल राज्य के नरेश प्रसेनजित और अवन्ति राज्य के शासक चन्द प्रद्योत थे, उन्हीं दिनों मत्स्य राज्य के लोकप्रिय राजा उदयन भी थे। कौशाम्बी नगरी उसी वत्स राज्य की राजधानी थी।

उत्खनन के परिणामस्वरूप यह सर्वविदित हो चुका है कि प्राचीन नगर कौशाम्बी की अवस्थिति वर्तमान प्रयाग (इलाहाबाद) के निकटस्थ आधुनिक कोसम इनाम एवं कोसम खिराज गांवों के आस–पास थी। आज न तो वत्स–राज्य है और न ही कौशाम्बी नगर अवशिष्ट शेष रह गयी है, केवल प्राचीन कौशाम्बी की स्मृतियाँ। इन्हीं स्मृतियों को जीवन्त करने का प्रयास ही 'कौशाम्बी का सांस्कृतिक अध्ययन' है।

यह अध्ययन प्राचीन ग्रन्थों एवं पुरातात्त्विक अवशेषों के समीक्षात्मक विवरणों पर आधारित है। कौशाम्बी–काल वस्तुतः बौद्ध–काल कहा जा सकता है। इसका अधिकांश उल्लेख बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों में पाया जाता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में मुख्यतः पुराणों, संस्कृत साहित्य के नाटकों, धर्मशास्त्रों आदि में कौशाम्बी, उदयन, वासवदत्ता, वत्सदेश आदि का उल्लेख मिलता है। चीनी यात्रियों (फाह्यान एवं ह्वेनसांग) ने भी कौशाम्बी का आँखों देखा विवरण लिखा है। कुछ विदेशी एवं भारतीय इतिहासकारों ने भी कौशाम्बी पर लेखनी चलायी है। पुरातत्व विभाग ने कौशाम्बी के प्राचीन वैभव का विश्लेषण वहाँ से मिले ध्वंसावशेषों एवं मृद्भाण्डों के आधार पर किया है, परन्तु प्राचीन कौशाम्बी की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा कलात्मक दशाओं का तथ्यपरक विवरण अद्यतन किसी भी ग्रन्थकार अथवा शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया है। एतन्निमित्त प्रस्तुत पुस्तक को अधोलिखित सात अध्यायों में विभक्त किया गया है–

SAMPLE

पुस्तक के प्रथम अध्याय में प्रस्तावना के अन्तर्गत कौशाम्बी का सामान्य परिचय इन उपशीर्षकों में कराया गया है – कौशाम्बी का अतीत, कौशाम्बी नगर की स्थापना, उनका नामकरण, उसके संज्ञान–स्रोत, वहां का सत्तानुक्रम, कौशाम्बी का वत्सराज, वत्सराज के संज्ञान–स्रोत, उसकी प्राचीन प्रस्थिति और वत्सराज उदयन का परिचय, कौशाम्बी का वर्तमान, कौशाम्बी की पहचान तथा नवसृजित जनपद कौशाम्बी का परिचय।

द्वितीय अध्याय की विषय–वस्तु इस प्रकार है– कौशाम्बी के उत्खनित भू–भाग, अशोक स्तम्भ क्षेत्र, घोषिताराम क्षेत्र, सुरक्षा प्राचीर क्षेत्र, राजप्रासाद क्षेत्र, कौशाम्बी के ध्वंसावशेष, लेख–अभिलेख, शिलालेख, सिक्के, मुद्राएँ, मुहरें, मृद्भाण्ड, मृत्फलक, मृण्मूर्तियाँ, लोकनिर्माण के ध्वंसावशेष।

तृतीय अध्याय में कौशाम्बी की सामाजिक स्थिति का परिचय, इन शीर्षकों में प्रस्तुत किया गया है– समाज की व्यवस्था– वर्ण–व्यवस्था, आश्रम– व्यवस्था, जाति व्यवस्था। सामाजिक संस्थाएँ– परिवार–संस्था, विवाह–संस्था, शिक्षा–संस्था। समाज के प्रमुख पात्र– पुरुष–पात्र, नारी–पात्र। समाज का स्वरूप– ग्रामीण समाज, नगरीय समाज। सामाजिक वर्ग–स्वामी वर्ग, दास–वर्ग। सामाजिक संघर्ष–आर्थिक संघर्ष, धार्मिक संघर्ष। सामाजिक जीवनचर्या– आवास, आहार, वेषभूषा एवं आभरण, आमोद–प्रमोद, आरोग्य।

चतुर्थ अध्याय में 'कौशाम्बी की आर्थिक स्थिति' का परिचय विस्तार के साथ अग्रांकित शीर्षकों में कराया गया है– कौशाम्बी के आर्थिक सन्दर्भ, कौशाम्बी की कृषिगत दशा– कृषि–भूमि एवं जलवायु, खेत की तैयारी, अन्नोत्पादन, शाक्–सब्जी उत्पादन, फलोत्पादन। कौशाम्बी में पशु–पक्षी पालन– पशुपालन की पृष्ठभूमि, चारागाह, पशुपालन, पक्षी एवं मत्स्यपालन। कौशाम्बी की औद्योगिक दशा– उद्योग की पृष्ठभमि, शिल्प, वृहद् उद्योग, लघु कुटीर उद्योग। कौशाम्बी का वाणिज्य एवं व्यापार– व्यापार की पृष्ठभूमि, अर्थ, प्रसिद्ध व्यापारी एवं व्यापार–केन्द्र, आर्थिक गठन, समिति–श्रेणी–निगम, माप– तौल एवं मूल्य निर्धारण, व्यापार–कर, पण्य (व्यापार–वस्तुएँ), विनिमय पद्धति, मुद्रा, व्यापार के प्रकार– स्थल मार्ग से व्यापार एवं जलमार्ग से व्यापार। अर्थोपार्जक– ग्रामीण कृषक, औद्योगिक, शिल्पी, मजदूर, अर्जकनारी, नौकर, दास।

पाँचवें अध्याय में कौशाम्बी की धार्मिक स्थिति को इन शीर्षकों में बताया गया है– धर्म की अवधारणा– धर्म का अर्थ एवं महत्व, धर्म के विभेद (प्रकार), धार्मिक सहिष्णुता एवं आन्दोलन। कौशाम्बी की धार्मिक स्थिति– कौशाम्बी में ब्राह्मण (हिन्दू) धर्म, कौशाम्बी में जैन–धर्म, कौशाम्बी में बौद्ध धर्म। कौशाम्बी में धर्म–कर्म– भक्तिभावना, स्तृति एवं प्रार्थना, मन्दिर जाना, मूर्ति– पूजा, पूजा–शिला (धर्मचक्रप्रस्तरखण्ड), यज्ञ–कर्म, दान–कर्म, पूर्त्त–कर्म, स्तम्भ–लेखों का लोकार्पण, धर्मसभाएँ, अन्य धर्म–कर्म। कौशाम्बी के देवी– देवता– जैन देवी–देवता, बौद्ध देवी–देवता, हिन्दू देवता, हिन्दू देवियाँ।

षष्ठ अध्याय में 'कौशाम्बी की कला' का विवरण इन शीर्षकों एवं उपशीर्षकों में प्रस्तुत किया गया है– वास्तुकला– नगर निर्माण, दुर्ग निर्माण, आवास निर्माण, फर्श निर्माण, मन्दिर निर्माण, चैत्य एवं स्तूप निर्माण, आराम–विहार–मठ–धर्मशाला निर्माण, स्तम्भ निर्माण, प्राचीर निर्माण, बुर्ज–निर्माण, सड़क–निर्माण, अन्य निर्माण– बांध, खाई, नाला, ड्रेन, गुफा, कुण्ड, बलिवे. दी। शिल्पकला– पात्र–शिल्प, आभूषण–शिल्प, आयुध–शिल्प, वस्त्र–शिल्प, चर्म–शिल्प, काष्ठ–शिल्प, मुद्रा–शिल्प, मोहर–शिल्प। ललितकला लेखन–उत्कीर्णन–उत्खनन कला, चित्रकला, संगीतकला। मृत्तिकाकला– मृणमूर्तिकला का इतिहास, कौशाम्बी की मृण्मृर्तिकला, कौशाम्बी की लौकिक मृण्मूर्तिकला, कौशाम्बी की धार्मिक मृण्मूर्तिकला।

सप्तम् अध्याय में पुस्तक का 'उपसंहार' प्रस्तुत किया गया है।

नमूना • SAMPLE

# आभारोक्ति

निर्धारित विधियों से तैयार की गई पुस्तक की पूर्णता पर मुझे जो कुछ भी सन्तोष प्राप्त हो रहा है, उसके लिये मैं अपने निर्देशक का अत्यन्त उपकार मानता हूँ। शीर्षक चयन, अध्यायों के आयोजन और संकलित सामग्रियों की वैज्ञानिक प्रस्तुति का मार्ग–दर्शन करने में उन्होंने मेरे लिये जो अपना बहुमूल्य समय दिया, उसके लिए मैं अपने पूजनीय निर्देशक डॉ० विमलेश कुमार पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, सल्तनत बहादुर पी०जी० कालेज, बदलापुर, जौनपुर का आजीवन ऋणी रहूँगा। सम्प्रति, उनके श्रीचरणों में मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

निर्देशक के प्रति आभार व्यक्त करने के अनुक्रम में डॉ० पन्नालाल द्विवेदी प्राचार्य, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, सन्तरविदासनगर (भदोही) के प्रति भी चरण–वन्दन करते हुए उनका आभार व्यक्त करता हूँ। उनका स्नेहिल मेरी इस पुस्तक की पूर्णता का सह–स्तम्भ रहा है। उनका यह ऋण मेरे जीवन पर आजन्म बना रहेगा।

इस पुस्तक की पूर्णता में आचार्य–कुल का आशीर्वचन भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। मैं इस अवसर पर सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर एवं काशीनरेश स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर सन्तरविदासनगर (भदोही) के सभी गुरूजनों को वन्दन करते हुए अपना आभार व्यक्त करता हूँ। मैं अपने शुभ–चिन्तकों सर्वश्री श्याम नारायण पटेल, राधारमण पटेल, रामसिंह, अशोक यादव को विनम्रतापूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने परिवारिक सदस्यों में अपने श्रद्धेय पिता स्व० श्री जियाराम यादव एवं माता श्रीमती दुलारी देवी जिनके आशीर्वाद, स्नेह एवं प्रेरणा से इस मुकाम तक पहुँचा हूँ सफलता की इस बेला में उनके प्रति श्रद्धा

SAMPLE

से नत्मस्तक हूँ। अपने अनुज राधेश्याम यादव तथा उनकी पत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी एवं रायसाहब यादव व उनकी पत्नी श्रीमती मंशा देवी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने हमेशा इस कार्य में मेरा उत्साहवद्ध ंन किया। अपने बहनोई श्री राजेन्द्र कुमार यादव एवं बहन श्रीमती मीरा देवी जिनका सहयोग एवं उत्साहवर्द्धन हमेशा इस कार्य में मिलता रहा, उनके प्रति भी आभारी हूँ। इस दुरूह कार्य में अपनी पारिवारिक जिम्मेदा. रियों की निभाते हुये मेरी धर्मपत्नी श्रीमती ज्योती यादव एवं प्यारे पुत्र प्रांजल को मैं कैसे भुला सकता हूँ, जिनका इस पुस्तक को पूर्ण करने में उत्साहवर्द्धन एवं सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा जो मेरी ताकत रही।

मैं विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों एवं कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके सहयोग से अपना शोध कार्य पूर्ण कर सका। मैं उन सभी विद्वानों तथा लेखकों जिनके ग्रन्थों एवं शोध–पत्रों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस पुनीत कार्य में मुझे सहायता मिली, उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

अन्त में मैं हेमन्त कुमार अस्थाना, अनन्त कुमार अस्थाना व अमन कुमार अस्थाना, अस्थाना कम्प्यूटर, टी०डी० कालेज रोड, जौनपुर के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरी इस पुस्तक को टंकित करने की कृपा की, उनकी टीम को मैं धन्यवाद ज्ञापित करना अपना पुनीत कार्य समझता हूँ।

पुस्तक में रह गई त्रुटियों के प्रति मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

**तेज बहादुर यादव**

# संकेत–सूची

| | | |
|---|---|---|
| ई०सं०सं० | – | इलाहाबाद संग्रहालय संख्या |
| ए०एस०आई० | – | आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया |
| ए०एस०आई०ए० | – | आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया एनुअल रिपोर्ट |
| ए०आई०आई०एस० | – | अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज |
| एपी०इ० | – | एपीग्रैफिका इण्डिया |
| कौ०सं०सं० | – | कौशाम्बी संग्रहालय संख्या |
| जि० | – | जिल्द |
| दि०सं०सं० | – | राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली संख्या |
| दिव्या० | – | दिव्यावदान |
| पृ० | – | पृष्ठ |
| भा०क०भ०सं० | – | भारत कला भवन (वाराणसी) संख्या |
| ललित० | – | ललितविस्तर |

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

# मानचित्र व फलक सूची


| | | |
|---|---|---|
| मानचित्र सं० 1 | इलाहाबाद जनपद में कौशाम्बी की स्थिति | 327 |
| मानचित्र सं० 2 | 600 ई०पू० का भारत | 328 |
| फलक सं० 1 | शिव सिर (कुषाणकाल) कौशाम्बी 19 इलाहाबाद संग्रहालय | 329 |
| फलक सं० 2 | कार्त्तिकेय (शुंगकाल) कौशाम्बी 4825 इलाहाबाद संग्रहालय | 330 |
| फलक सं० 3 | सूर्य इलाहाबाद संग्रहालय | 331 |
| फलक सं० 4 | गजलक्ष्मी (कुषाणकाल) इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग के संग्रहालय में संग्रहीत | 332 |
| फलक सं० 5 | पद्मवासिनी लक्ष्मी (शुंगकाल) कौशाम्बी 5243 इलाहाबाद संग्रहालय | 333 |
| फलक सं० 6 | नैगमेषी कौशाम्बी नं० 5287 इलाहाबाद संग्रहालय | 334 |
| फलक सं० 7 | सिनीवाली (शुंगकाल) कौशाम्बी 5158 इलाहाबाद संग्रहालय | 335 |
| फलक सं० 8 | प्रजनन की देवी (कुषाणकाल) कौशाम्बी 7716 पटना संग्रहालय | 336 |
| फलक सं० 9 | रावण द्वारा सीता का हरण कौशाम्बी संग्रहालय | 337 |


SAMPLE

| | | |
|---|---|---|
| फलक सं० 10 | हारीति (कुषाणकाल) कौशाम्बी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के संग्रालय में संग्रहीत | 338 |


नमूना • SAMPLE